International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 683-685

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 683-685
www.allresearchjournal.com
Received: 09-02-2017
Accepted: 10-03-2017

अनिता मधुर
पीएच.डी. स्कॉलर, जे.एन.यू. यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत

डॉ. शुभा व्यास
प्रोफेसर, जे.एन.यू. यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
अनिता मधुर
पीएच.डी. स्कॉलर, जे.एन.यू. यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत

किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधी तनाव पर बोर्ड के प्रकार, लिंग एवं उनकी अन्तः क्रिया के प्रभाव का अध्ययन

अनिता मधुर, डॉ. शुभा व्यास

सारांश
इस शोध का मुख्य उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधी तनाव का अध्ययन करना था। अध्यापक संबंधित तनाव का अध्ययन, बोर्ड के प्रकार, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया पर किया गया है।
अध्ययन में स्तरीत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयनित जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के 607 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया था। प्रदत्तों के संकलन के लिए स्वनिर्मित अध्यापक संबंधी तनाव मापनी का प्रयोग किया गया। अध्यापक संबंधी तनाव पर बोर्ड के प्रकार, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया के सार्थक प्रभाव को जानने के लिए द्विमार्गी प्रसरण एवं टी–परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।
निष्कर्ष में पाया कि अध्यापक संबंधित तनाव पर बोर्ड के प्रकार, लिंग एवं उनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

कुट शब्द : किशोर विद्यार्थी, अध्यापक संबंधी तनाव, बोर्ड के प्रकार, लिंग

प्रस्तावना
आधुनिक युग उपलब्धि का युग है। इसे तनाव का युग भी कहा जाता है। तनाव प्रत्येक आयु वर्ग के व्यक्तियों में देखने को मिलता है। किन्तु किशोरावस्था में सर्वाधिक पाया जाता है। किशोरावस्था को स्टर्न ने तनाव एवं तुफान की अवस्था बताया हैं।
किशोर विद्यार्थी अपनी दिनचर्या का एक लम्बा समय विद्यालय में व्यतीत करता हैं। विद्यालय में एक वह अपने अध्यापकों, सहपाठियों, प्रधानाध्यापक आदि से अन्तःक्रिया करता है। इस अन्तःक्रिया के द्वारा उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलूओं का विकास होता है। विद्यार्थी में चारित्रिक गुणों के विकास में अध्यापकों के व्यवहार की अहम् भूमिका होती हैं। कक्षागत अध्ययन में वह अध्यापकों से केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त नहीं करता अपितु उन मूल्यों, मानदण्डों एवं व्यवहार को भी सीखता है जो अध्यापकगणो के व्यवहार में निहित होते है, और उसे प्रभावित करते हैं। अध्यापक को हमारे समाज में एक आदर्श व्यक्तित्व माना जाता है और उससे अपेक्षा की जाती है कि वह अपने व्यवहार में उन्हीं मूल्यों को सम्मिलित करे जो समाज के हित में हों।

अध्ययन की आवश्यकता : किशोर विद्यार्थी देश का भविष्य हैं। इनके चहुँमुखी विकास के लिए इन्हें आदर्श एवं तनावमुक्त वातावरण उपलब्ध करवाना अत्यन्त आवश्यक है। इनके सर्वांगीण विकास और देश के भविष्य निर्माण की समस्त जिम्मेदारी शिक्षकगणों पर हैं। अतः शिक्षकों से एक सभ्य व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। किन्तु समय परिवर्तन के साथ शिक्षकों के व्यवहार में से मूल्यों का ह्रास हो रहा है। शिक्षकों के अनुचित व्यवहार संबंधी अनेक समाचार सुनने को मिलते हैं। मन शिक्षको का अनुचित व्यवहार विद्यार्थी के कोमल मन पर प्रतिघात करता है।
उपर्युक्त परिस्थितियों की सार्थकता को ध्यान में रखते हुए शोध के लिए इस विषय का चुनाव किया गया।

समस्या कथन : किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधित तनाव पर बोर्ड के प्रकार, लिंग एवं उनकी अन्तःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य
1. किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधित तनाव पर बोर्ड के प्रकार के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधित तनाव पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

3. किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधित तनाव पर बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अन्तःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

1. किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधित तनाव पर बोर्ड के प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।
2. किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधित तनाव पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।
3. किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक संबंधित तनाव पर बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

अध्ययन विधि : इस शोध के अन्तर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था।

अध्ययन की जनसंख्या एवं न्यादर्श : इस शोध की जनसंख्या जयपुर शहर के सी.बी.एस.ई. तथा आर. बी. एस.ई. बोर्ड में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थी थे, जिनकी संख्या 1,17,678 है उपर्युक्त जनसंख्या में से 607 विद्यार्थी (293 छात्र, 314 छात्रायें) का चुनाव स्तरित यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के रूप किया गया।

उपकरण : प्रदत्तों के संकलन के लिए स्वनिर्मित अध्यापक संबंधी तनाव मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी : प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए द्विमार्गी प्रसरण विधि तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

अध्यापक संबंधी तनाव पर बोर्ड के प्रकार, लिंग एवं उनकी अन्तःक्रिया का अध्ययन करने के लिए आँकड़ो का विश्लेषण 2 x 2 फेक्टोरियल डिजाइन अनोवा की सहायता से किया गया। यहाँ बोर्ड के दो स्तर तथा लिंग के दो स्तर है। परिणाम तालिका 1.1 में दिये गये हैं।

अध्यापक सम्बन्धित तनाव पर बोर्ड के प्रकार, लिंग एवं उनकी अन्तःक्रिया का अध्ययन करने के लिए आँकड़ो का विश्लेषण 2 x 2 फेक्टोरियल डिजाइन अनोवा की सहायता से किया गया। यहाँ बोर्ड के दो स्तर तथा लिंग के दो स्तर है। परिणाम तालिका 1.1 में दिये गये हैं।

तालिका 1.1: अध्यापक सम्बन्धित तनाव के 2 x 2 फेक्टोरियल अनोवा का सारांश

प्रसरण स्त्रोत	मुक्तांश (df)	वर्गो का योग (SS)	माध्य संकाय (MSS)	F मान
राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (अ)	1	1.678	1.678	0.146
लिंग (ब)	1	73.938	73.938	6.432
अ x ब	2	0.116	0.116	0.010
त्रुटि	603	6932.082		
योग	606			

1.1 (अ) किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक सम्बन्धित तनाव पर बोर्ड के प्रकार का प्रभाव

तालिका 1.1 में बोर्ड के प्रकारों के लिए F का मान 0.146 है जो कि 0.01 स्तर पर df = 1/603 के साथ सार्थक नही है। यह दर्शाता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड सम्बद्ध विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के विद्यालयी तनाव के मध्यमानों में सार्थक भिन्नता नहीं है। अतः बोर्ड के प्रकार का किशोरों के विद्यालयी तनाव पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

अतः शून्य परिकल्पना ''किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक सम्बन्धित तनाव पर बोर्ड के प्रकारों का सार्थक प्रभाव नही पड़ता है'', स्वीकृत की जाती हैं।

1.1 (ब) किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक सम्बन्धित तनाव पर लिंग का प्रभाव।

तालिका 1.1 से ज्ञात होता है कि लिंग के लिए F का मान 6. 432 है जो कि df=1/603 के साथ 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। यह दर्शाता है कि छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयी तनाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना ''किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक सम्बन्धित तनाव पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं। स्वीकृत की जाती है।

1.1 (स) किशोर विद्यार्थियों के विद्यालयी तनाव पर बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अन्तःक्रिया का प्रभाव

तालिका 1.1 में बोर्ड के प्रकारों एवं लिंग की अन्तःक्रिया के लिए F का मान 0.010 है जो कि 0.01 स्तर पर df=1/603 के साथ सार्थक नहीं है। अतः केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र एवं छात्राओं के अध्यापक सम्बन्धित तनाव के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।''

अतः शून्य परिकल्पना ''किशोर विद्यार्थियों के अध्यापक सम्बन्धित तनाव पर बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं,'' स्वीकृत की जाती है।

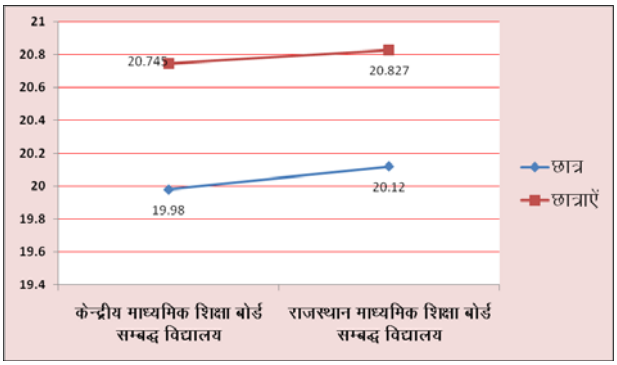

ग्राफ संख्या 1.1: केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों में अध्यापक सम्बन्धित तनाव

उपरोक्त ग्राफ से ज्ञात होता है कि छात्राओं में अध्यापक सम्बन्धित तनाव छात्रों की तुलना में अधिक है एवं बोर्ड के प्रकार का अध्यापक सम्बन्धित तनाव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

निष्कर्ष एवं परिचर्चा : अध्यापक संबंधित तनाव पर बोर्ड के प्रकार, लिंग एवं उनकी अन्तःक्रिया का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह स्पष्ट करता है कि विद्यार्थी किसी भी विद्यालय का हो, अध्यापकों का व्यवहार उन्हें समान रूप से प्रभावित करता हैं। अध्यापक का रूखा एवं पक्षपातपूर्ण व्यवहार, उसके अध्यापन की विधि, आलोचनात्मक प्रवृत्ति आदि सभी विद्यार्थियों को समान रूप से प्रभावित करती है क्योंकि वे अपने गुरूजनों से इस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा नहीं रखते हैं।

गरिमा वर्मा., शुभी, तोमर, एवं अन्य (2014), सबिनाथ, देव., स्ट्रॉल. एवं जिओन्दोग, सुन (2015), आशा मेनन (2014), सिमुफोरोसा (2013) आदि के शोध निष्कर्ष प्रस्तुत शोध का समर्थन करते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ : किशोरों के चहुँमुखी विकास के लिए कक्षाकक्ष का वातावरण खुला एवं सौहार्दपूर्ण होना चाहिए। कक्षाकक्ष वातावरण को स्वस्थ एवं खुला बनाने के लिए अध्यापक विद्यार्थियों के साथ अन्तःक्रिया करने को प्रेरित होंगे, शिक्षक अपनी भूमिका के महत्व को जानकर, किशोरों की मनोदशा एवं व्यवहार को जानने के प्रयास करेंगे, जिससे वे उन्हें उचित परामर्श द्वारा तनाव से दूर कर पायेगें।

संदर्भ सूची

1. कुमार, मनोज. (2013). ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेस विथ एडजस्टमेंट, स्ट्रेस एण्ड अचीवमेंट अमंग सीनियर सैकण्डरी स्टूडेंटस।
2. हरलॉक, एलिजाबेथ बी. (1976). पसनेलिटी डेवलपमेंट, टी एम एच एडिशन, नई दिल्ली : टाटा मेकग्रा हिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड पृ. सं. 223।
3. कार्टज डेविस एस. एवं अन्य. (2015). हाऊ स्ट्रेस अफेक्ट यॉर हेल्थ।
4. सिंह, कुमार अरूण. (2006). उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान वाराणसी : मोतीलाल बनारसी दास पृ. सं. 754।
5. क्रिस्टा, एलिक्स. (1986). स्ट्रेस सरवाइवल. : गुड पब्लिकेशन पृ. सं. 8–9, लंदन।
6. मजूमदार, हरज्योति एवं अन्य. (2012). ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑन स्ट्रेस एण्ड इट्स कॉन्ट्रीब्यूटिंग फेक्टर्स अमंग द ग्रेजुएट एण्ड पोस्ट ग्रेजूएट स्टूडेंट्स.।
7. स्नो, एल. डेविड. (2003). द रिलेशनशिप ऑफ वर्क स्ट्रेसर, कॉपिग एण्ड सोशियल सपोर्ट टू साइकोलोजिकल सिस्टमस् अमंग फीमेल सेक्रिटेरियल एम्प्लॉई.।
8. हुली, आर. प्रेरणा. (2014). स्ट्रेस मैनेजमेंट इन एडोल्सेंट स्टूडेंटस इन चण्डीगढ़।
9. अंशु. (2014). ए स्टडी ऑफ स्ट्रेस, एडजस्टमेंट एण्ड मोटर एबिलिटी बिटवीन एक्सट्रोवर्ड एण्ड इन्ट्रोवर्ट वॉलीबॉल प्लेयर्स : पीएच.डी. चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी,।
10. हरलॉक, ऐलिजाबेथ बी. (1981). डेवलेपमेंट साइकोलॉजी – ए लाइफ स्पेन एप्रोच., नई दिल्ली : टाटा मेकग्रा हील पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड पृ. सं. 230।
11. हरलॉक, एलिजाबेथ बी. (1997). चाइल्ड डेवलमेंट. सिक्सथ एडिशन, नई दिल्ली : मेकग्रा हिल एजूकेशन (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड, पृ. सं. 442–444।
12. कुमार, अनुज. (2012). सतत एवं व्यापक मूल्यांकन भारतीय आधुनिक शिक्षा. वर्ष 33, अंक 1, नई दिल्ली : एन. सी. आर. टी., पृ. सं. 57।
13. कौशिक, विजया कुमारी एवं शर्मा, एस. आर. (2002). चाइल्ड साइकोलॉजी, नई दिल्ली : अमोल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड पृ. सं. 171–198।